भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (का.हि.वि.), वाराणसी

"औषध विज्ञान की अद्यतन प्रौद्योगिकी: वर्तमान एवं भविष्य"
राष्ट्रीय संगोष्ठी
(दिनांक: 27 मई, 2023)

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) वाराणसी के भैषजकीय अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी विभाग एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 27 मई, 2023 को **"औषध विज्ञान की अद्यतन प्रौद्योगिकी: वर्तमान एवं भविष्य"** विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन एनी बेसेंट व्याख्यान कक्ष संकुल (ए.बी.एल.टी.-4) में प्रातः 8.00 बजे से रात्रि 9.30 बजे तक किया गया। उक्त संगोष्ठी राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 के आलोक में "औषध विज्ञान की अद्यतन प्रौद्योगिकी: वर्तमान और भविष्य" विषय पर आधारित राजभाषा हिन्दी में आयोजित हुई। संगोष्ठी में अध्यक्ष के रूप में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (का.हि.वि.) वाराणसी के निदेशक आचार्य प्रमोद कुमार जैन, मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. संजय सिंह, कुलपति, डॉ. भीम राव अंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ, विशिष्ट अतिथि के रूप में आचार्य नरेंद्र कुमार जैन, पूर्व विभागाध्यक्ष, भैषज विज्ञान विभाग, डॉ. हरी सिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर (मध्य प्रदेश), संयोजक के रूप में भैषजकीय अभियांत्रिकी विभाग की विभागाध्यक्षा डॉ. एस. हेमलता, कोषाध्यक्ष के रूप में डॉ. श्रेयांश कुमार जैन तथा आयोजन सचिव आचार्य सुशांत कुमार श्रीवास्तव का आशीर्वचन एवं आलोक प्राप्त हुआ। संरक्षक के रूप में अधिष्ठाता आचार्य विकाश कुमार दुबे, सह सचिव के रूप में डॉ. सुनील मिश्र, डॉ. विनोद तिवारी, डॉ. रजनीश तथा संगोष्ठी के सदस्यों के रूप में आचार्य ब्रहमेश्वर मिश्रा, डॉ.आशीष कुमार अग्रवाल, डॉ. जयराम मीणा, डॉ. अशोक मौर्य, डॉ. सुनील कुमार मिश्रा एवं डॉ. दिनेश कुमार सम्मिलित हुये। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में देश के विभिन्न भागों से कुल 400 प्रतिभागियों ने भाग लिया तथा आयोजित हुए छः सत्रों में 06 विशेषज्ञ वक्ताओं द्वारा हिंदी में व्याख्यान दिये गए तथा 12 युवा शिक्षकों एवं वैज्ञानिकों ने सत्र अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष के रूप में सक्रिय योगदान दिया। यह राष्ट्रीय संगोष्ठी विज्ञान और इंजीनियरिंग अनुसंधान बोर्ड, भारत सरकार, सी.वी.रमन अकादमी, राजभाषा समिति,भा.प्रौ.सं.(का.हि.वि.) वाराणसी द्वारा वित्त पोषित थी।

कार्यक्रम को कुल चार भागों में आयोजित किया गया, जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

1) पंजीकरण

"औषध विज्ञान की अद्यतन प्रौद्योगिकी: वर्तमान एवं भविष्य" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में पूर्वाह्न 08:00 बजे से रात्रि 09:30 बजे तक देश के कोने कोने से आए विद्यार्थियों, शिक्षकगण, शोधार्थियों का पंजीकरण किया गया, जिसमें सहभागियों को एक बैग, कार्यक्रम सूची, अल्पाहार, लंच व डिनर कूपन, नोटपैड, पेन इत्यादि प्रदान की गई। लगभग 400 प्रतिभागियों का पंजीकरण किया गया। इस पंजीकरण कार्यक्रम में भैषजकीय अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी विभाग के शोध विद्यार्थियों द्वारा पंजीकरण कार्य सम्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी गई। पंजीकरण की राशि विद्यार्थियों के लिये ₹500/- एवं अकादमिक प्रतिनिधियों के लिये ₹1000/- जी.एस.टी. के साथ रखी गई थी। संस्थान के विद्यार्थियों ने स्वयंसेवकों (वालेण्टियर्स) के रूप में कार्य किया। अतः उनका पंजीकरण निःशुल्क किया गया था।

12/7/2023

2) उद्घाटन समारोह

कार्यक्रम का शुभारंभ पंडित महामना मालवीय जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। सभी गणमान्य मंचासीन अतिथियों को पुष्प गुच्छ एवं स्मृति चिन्ह देकर अभिवादन किया गया। इस संगोष्ठी में संस्थान के अधिष्ठाता (अनुसंधान एवं विकास) आचार्य विकास कुमार दुबे, अधिष्ठाता (छात्र कल्याण) आचार्य लाल प्रताप सिंह, अध्यापकगण, शोध विद्यार्थी, देश के कोने कोने से विभिन्न संस्थानों के आए छात्र व अध्यापक सम्मिलित हुए। उद्घाटन सत्र में आचार्य डॉ. हेमलता ने स्वागत सम्बोधन एवं आचार्य सुशांत कुमार श्रीवास्तव ने कार्यक्रम की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की। विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित आचार्य नरेंद्र कुमार जैन ने बताया कि राष्ट्र में भैषजकीय अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी विषय पर यह पहली राष्ट्रीय संगोष्ठी राजभाषा हिन्दी में आयोजित हुई।

आचार्य नरेंद्र कुमार जैन ने यह भी बताया कि वर्तमान समय में मध्य प्रदेश में डॉक्टर दवाओं का विवरण मरीजों को हिन्दी में लिखकर दे रहे हैं, अतः औषध विज्ञान के क्षेत्र में यह हिन्दी में किया गया यह प्रयास अभूतपूर्व एवं सराहनीय है। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ. भीम राव अंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ के कुलपति डॉ. संजय सिंह ने कहा कि मैं अपना कोई भी उद्बोधन सदैव हिन्दी में ही देने का प्रयास करता हूँ। हमलोग औषध विकास के क्षेत्र में लगातार काम कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि स्वस्थ्य जीवन और मोटे अनाज के प्रयोग के बारे में आयोजित सत्र से सभी लोग लाभान्वित होंगे। इस संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक माननीय आचार्य प्रमोद कुमार जैन के द्वारा हुई। अध्यक्ष के रूप में उनकी गरिमामयी उपस्थिति एवं कुशल मार्गदर्शन ने कार्यक्रम को अत्यंत सफल बनाया। उन्होंने बताया कि नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत क्षेत्रीय भाषा एवं हिन्दी में शिक्षा प्रदान करना मुख्य लक्ष्य है और इस दिशा में हम आगे बढ़ रहे हैं। सम्पूर्ण विश्व के स्वास्थ्य को सुदृढ़ करने में एक फार्मेसी के विशेषज्ञ की बहुत बड़ी भूमिका होती है। यदि उसे मैं स्वास्थ्य के प्रति सजगता की रीढ़ कहूँ तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। भैषजकीय अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. एस हेमलता ने संस्थान की राजभाषा समिति एवं विशेष रूप से कार्यक्रम के आयोजन समिति के सचिव आचार्य सुशांत कुमार श्रीवास्तव जी को अत्यंत बधाई दी। आचार्य सुशांत कुमार श्रीवास्तव ने सभी सहभागियों को आज के राष्ट्रीय संगोष्ठी में आयोजित होने वाले सत्रों एवं इससे जुड़े विषयों, यथा, औषध उद्योग एवं शिक्षा, वेदों में विज्ञान, मोटे अनाज की उपयोगिता, नैनो औषधि, औषध विज्ञान के नए आयाम व तकनीक के महत्व को उजागर किया। उद्घाटन सत्र के अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. श्रेयांश कुमार जैन, भैषजकीय अभियांत्रिकी विभाग द्वारा किया गया, जिन्होंने सभी आयोजन समिति के कार्यकर्ताओं अध्यापक, शोध छात्र, विद्यार्थी, कर्मचारी इत्यादि को महत्वपूर्ण योगदान के लिए सराहना की।

3) व्याख्यान सत्र

उक्त राष्ट्रीय संगोष्ठी में अति महत्वपूर्ण एवं लाभप्रद सत्रों में प्रथम व्याख्यान सत्र का आयोजन पूर्वाह्न 11.30 बजे से किया गया। इसमें विशिष्ट वक्ता के रूप में आमंत्रित **डॉ. अशोक ओमरे**, फार्मास्यूटिकल उद्योग और शिक्षा, सलाहकार, मुंबई ने *"भारतवर्ष में औषधि उद्योग एवं शिक्षा के विकास का संक्षिप्त इतिहास व विभिन्न औषधीय प्रणालियों में सामंजस्य"* विषय पर व्याख्यान दिया। जिसके अध्यक्ष अनुसंधान विज्ञानी डॉ. आशीष कुमार अग्रवाल तथा उपाध्यक्ष डॉ. जयराम मीणा थे। डॉ. अशोक ओमरे ने औषध उद्योग के इतिहास को क्रमिक रूप में रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि भारतवर्ष में भैषजिक विज्ञान (फार्मेसी) का इतिहास ईसा पूर्व से लगभग 800 सालों से अंकित है, सुश्रुत संहिता एवं चरक संहिता (300 ईसा पूर्व) में भारत

प्राचीन औषधीय ज्ञान आज भी मौजूद है। सुश्रुत संहिता एवं चरक संहिता वर्तमान आयुर्वेद की रीढ़ है तथा वैश्विक क्षितिज पर मान्य भी है एवं वर्तमान में आयुर्वेदिक चिकित्सा का आधार भी हैं। व्याधियों एवं उपचार के लिए औषधियों एवं चिकित्सा की आवश्कता आदिकाल से रही है। विश्व के हर हिस्से में - अमेरिका, अफ्रीका, चीन, अरब, जर्मनी सभी स्थानों में दवाओं की उत्पत्ति पौधों, पेड़ों, उपलब्ध लवण-क्षार-अम्ल और सामुद्रिक प्राणियों से हुई। उस काल खंड में भी शरीर की अंदरूनी व्याधियों के अलावा मौसम, भौगोलिक परिस्थितियों, युद्ध, जंगली जानवरों आदि के कारण स्वास्थ्य पर असर पड़ता था और आज भी पड़ता है। उन्होंने भारत के औषधीय उद्योग की विकास यात्रा को बहुत ही रोचक ढंग से समझाया तथा वर्तमान के नई औषधियों की खोज तथा फोर्मूलेशन में आधुनिक टेक्नालजी की उपयोगिता एवं उसकी वैश्विक स्वीकार्यता पर प्रकाश डाला।

व्याख्यान सत्र में अगले वक्ता के रूप में **आचार्य बी. एन.सिन्हा**, भैषजकीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, बिड़ला प्रौद्योगिकी संस्थान, मेसरा, झारखंड ने *"भारत में औषधि विज्ञान और प्रौद्योगिकी शिक्षा 5.0 के विभिन्न परिप्रेक्ष्य"* विषय पर प्रकाश डाला। इस सत्र के अध्यक्ष अनुसंधान विज्ञानी डॉ. अशोक मौर्या तथा उपाध्यक्ष डॉ. अजय सचान थे। आचार्य बी. एन.सिन्हा ने बताया कि कैसे हम लोग आजकल औषधि विज्ञान को उद्योगों से जोड़कर लाभान्वित हो रहे हैं।

उपरोक्त व्याख्यान सत्र में संस्थान के वरिष्ठतम एवं औषध विज्ञान के क्षेत्र में प्रतिष्ठित **आचार्य डॉ. ब्रहमेश्वर मिश्रा** जी ने *"व्याधियों के प्रभावी उपचार हेतु जागरूकता"* विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। इस सत्र के अध्यक्ष विज्ञानी डॉ. प्रदीप कुमार तथा उपाध्यक्ष डॉ. सुनील कुमार मिश्रा थे। उन्होंने यह बताया कि वर्तमान परिदृश्य में अनेक प्रकार के संचारी बीमारी फैल रही हैं, जिसके प्रभावी उपचार हेतु लोगों में जागरूकता की अति आवश्यकता है और इसके रोकथाम के लिए सही दवा का प्रयोग भी जरूरी है। दवाओं के उपयोग में हम सभी को दवाओं की एक्सपायरी डेट की अपेक्षा उसकी निर्माण तिथि की तरफ ध्यान देना चाहिए ताकि उस दवा का प्रभाव और सुरक्षा अच्छे से दिख सके।

व्याख्यान सत्र के अगले वक्ता **आचार्य नरेंद्र कुमार जैन**, पूर्व विभागाध्यक्ष, भैषज विज्ञान विभाग, डॉ. हरी सिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर (मध्यप्रदेश) ने वैश्विक स्तर पर दवाओं के विभिन्न मानकों की चर्चा करते हुए अच्छी दवाओं और खराब दवाओं के बारे में प्रकाश डाला। इस सत्र के अध्यक्ष अनुसंधान विज्ञानी डॉ. दिनेश कुमार तथा उपाध्यक्ष डॉ. रवि भूषण सिंह थे। आचार्य जैन ने बताया कि बाजार में बहुत सी दवाएं उपलब्ध हैं परंतु इनमें से कौन सी दवा उपयोग में लाई जानी चाहिए या नहीं इसकी जागरूकता होना बहुत जरूरी है।

डॉ. मोहन जी. सक्सेना, प्रबंध निदेशक, आयुर्वेद लिमिटेड ने "वेदों में विज्ञान" विषय पर अत्यंत सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया। इस सत्र के अध्यक्ष अनुसंधान विज्ञानी डॉ. बृजेश सिंह तथा उपाध्यक्ष डॉ. अवनीश त्रिपाठी थे। डॉ. मोहन जी. सक्सेना ने सभी को यह अवगत कराया कि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में फार्मेसी शिक्षा की नींव पड़ी और यही से औषध विज्ञान में शिक्षा का व्यापक प्रसार शुरू हुआ। हमारी प्राचीन ग्रन्थों चरक संहिता एवं सुश्रुत संहिता में औषधी के मूल तत्वों का वृहत वर्णन है। उक्त व्याख्या को सक्सेना जी ने पीपीटी के माध्यम से सचित्र वर्णन करके बताया -

२३२।। 12/3/2023

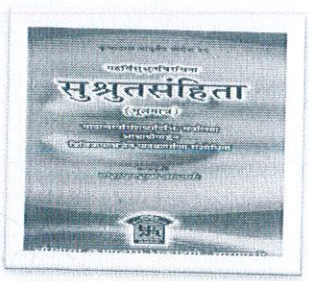

उन्होंने बताया कि वेदों के अध्ययन एवं ज्ञान से समाज में व्याप्त विसंगतियों एवं कुरीतियों को रोका जा सकता है।

इस सत्र के अगली कड़ी में **डॉ. विनय गुप्ता**, सहायक औषधि नियंत्रक, केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन, वाराणसी ने "वर्तमान और भविष्य में जैविक औषधियों के विकास में नूतन नियामक दृष्टि" विषय पर व्याख्यान दिया। इस सत्र के अध्यक्ष अनुसंधान विज्ञानी डॉ. सौरभ सिन्हा तथा उपाध्यक्ष डॉ. प्रभास नाथ त्रिपाठी थे। उन्होने बताया कि विश्व के कुल टीके का 60% से अधिक भारत में निर्मित होता है और वैश्विक स्तर पर लगभग 200 देशों को निर्यात किया जाता है। **आचार्य कमल नयन द्विवेदी**, अधिष्ठाता, आयुर्वेद संकाय, आई. एम. एस., बीएचयू ने "वर्तमान परिप्रेक्ष्य में श्री अन्न की उपयोगिता" पर अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने बताया कि आज के भागदौड़ के जीवन में मोटे अनाज की उपयोगिता बढ़ गई है, जिसमें सामा, कोदो, निवार, गवेधुक, कनगुनी, चेना, जावर, रागी, बाजरा शामिल है।

इस अति महत्वपूर्ण व्याख्यान सत्र के अंतिम वक्ता **आचार्य पुष्पेंद्र कुमार त्रिपाठी,** निदेशक, भैषजकीय विज्ञान संस्थान, लखनऊ विश्वविद्यालय ने "नैनो औषधि बनाने के डेंड्रीमर आधारित दृष्टिकोण" पर प्रस्तुति दिया। इस सत्र के अध्यक्ष आचार्य योगेश चन्द्र शर्मा तथा उपाध्यक्ष डॉ. श्रेयांश कुमार जैन थे। उन्होंने औषधि डिलीवरी में डेड्रिमर्स का अनुप्रयोग का सचित्र वर्णन किया -

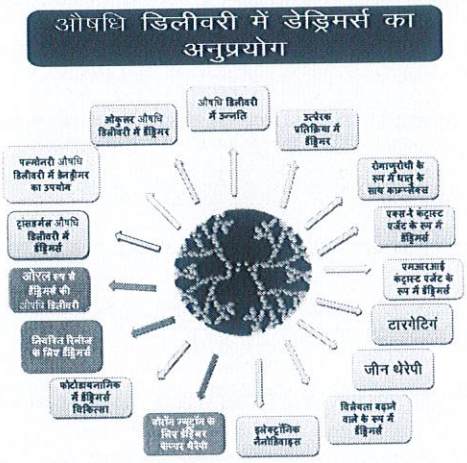

4) समापन एवं प्रमाण पत्र वितरण समारोह

कार्यक्रम के अंत में सभी सम्मानित अतिथि वक्ताओं को उनके महत्वपूर्ण व्याख्यान प्रस्तुति हेतु धन्यवाद दिया गया। समारोह में सम्मिलित सभी सहभागियों को संगोष्ठी से जुड़ने हेतु आभार व्यक्त किया गया। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में सम्मिलित कुल 400 प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र भी प्रदान किया गया। उक्त राष्ट्रीय संगोष्ठी से जुड़कर सभी लोगों ने अत्यंत प्रसन्नता व्यक्त की। कार्यक्रम के अंत में आचार्य सुशांत कुमार श्रीवास्तव, आयोजन सचिव ने सभी का हृदय से आभार व्यक्त किया।

व्याख्यानमाला की समाप्ति के उपरांत सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ जिसमें लखनऊ विश्वविद्यालय से आये प्रतिभागियों, भैषजकीय अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भा.प्रौ.सं.(का.हि.वि.) वाराणसी के विद्यार्थियों ने एवं अतिथि वक्ता श्री मोहन जी सक्सेना ने अपनी अपनी प्रस्तुतियों से सभा को मुग्ध कर दिया। तदोपरांत रात्रि भोज के बाद सभा का समापन हुआ।

12/7/2023